114

कालचक्र अभिषेक विधि

[एक स्फुट प्रकाश]

प्रधान सम्पादक

प्रो० रामशङ्कर त्रिपाठी

अनुवादक-मण्डल

श्री लोसङ् नोरबु शास्त्री
श्री पेमा तेनजिन भोटिया
श्री रमेशचन्द्र नेगी (माथस)

114

कालचक्र अभिषेक विधि

[एक स्फुट प्रकाश]

प्रधान सम्पादक

प्रो0 रामशङ्कर त्रिपाठी

अनुवादक-मण्डल

श्री लोसङ् नोरबु शास्त्री
श्री पेमा तेनजिन भोटिया
श्री रमेशचन्द्र नेगी (माथस)

हिमालय-बौद्ध संस्कृति-ग्रन्थमाला-६

प्रथम संस्करण	१६६४	३,०००	प्रतियां
द्वितीय संस्करण	१६६६	१०,०००	प्रतियां
तृतीय संस्करण	२०००	१०,०००	प्रतियां

मूल्य: १० रू०

प्रकाशक:
लामा छोस्फेल ज़ोदपा
अध्यक्ष हिमालय बौद्ध-संस्कृति संरक्षण सभा
५ लद्दाख बुद्ध विहार, बेला रोड, देहली।
दूरभाष: ३६६५३२३

Printed at Jayyed Press, 5228 Ballimaran, Delhi-110006

प्रकाशन

सामान्य कर्म के अधीन इस जगत में विवेकशील मानव ही नहीं, बल्कि मूर्ख-संमोह वाले जीव-जन्तु छोटे से छोटे दुख भी नहीं चाहने वाले होते हैं।

इसीलिये सभी सुख प्राप्ति के उपाय और दुःख से बचाव के उपायों और बुद्धि के पूर्ण बल से वैज्ञानिक पदार्थों की शक्ति के द्वारा बाह्य उन्नति से आन्तरिक चित्त में सुख चैन की वृद्धि होने के बजाए और अधिक भय, कठिनाई, लड़ाई-झगड़े दिन प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं, जिसे हम प्रत्यक्ष देख रहे है।

सम्प्रति, इसी जन्म के ही नहीं बल्कि जन्म-जन्मान्तरों तक के सुख-समृद्धि की अगर इच्छा हो तो, उपाय कौशल-महाकारूणिक शास्ता शाक्यमुनि द्वारा बताए गये सम्यक् धर्म में प्रवेश कर, उस मार्ग पर चलने पर ही शान्ति की प्राप्ति हो सकती है।

इस सभ्यक धर्म को पहले लक्षणों से सम्पन्न गुरू से सुनने की आवश्यकता होती है। इसे देखते हुऐ हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा द्वारा अपने उद्देश्य के अनुरूप परमपावन दलाई लामा जी तथा सभी सम्प्रदायों के रिन्पोछे गुणो तथा पारंगत गुरुओं से क्षेत्रीय लोगों के इच्छा के अनुरूप हिमालय क्षेत्रों में प्रवचनों का आयोजन किया जाता है।

सन् १६८४ में जब परम पावन दलाई लामा जी ने जिस्पा लाहोल हिमाचल में श्रीकाल चक्र अभिषेक देना स्वीकार किया तो हिमालयन संस्कृति संरक्षण सभा के तत्वा-धान में काल चक्र अभिषेक विधि का सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद का प्रथम प्रकाशन करके इस ग्रन्थ को जन साधारण के लिए सुगम बना कर एक महत्वपूर्ण कार्य किया।

आगामी दिसम्बर १६६६ में सालुगाड़ा (पश्चिम बंगाल) में हिमालयन बौद्ध सस्कृति संरक्षण सभा के अनुरोध पर परमपावन दलाई लामा जी ने श्री काल चक्र अभिषेक करने की अनुकम्पा की है। उस समय लोगों को यह ग्रन्थ आसानी से उपलब्ध हो, इस उद्देश्य से हिमालयन् बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा के माध्यम से वर्तमान संस्करण को द्वितीय बार प्रकाशित किया।

सुख चैन के इच्छुक सभी लोग इस ग्रन्थ को सुनें, और उसके बाद मन और भावना पूर्वक शीघ्र ही शान्ति प्राप्त करने के उपाय में दिन-रात प्रयत्न करें, तभी हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा अपने इस लघु प्रयास को सार्थक समझेगी।

लामा छोसफेल ज़ोदपा

दिल्ली

१५ नवम्बर १६६६

ཨ ཝཾ

'A' and 'Vam" intermingled form in *Lantsa* script of Sanskrit. 'A' represents the wisdom and 'Vam' stands for compassion. The union of this two is the message of Kalachakra. Therefore, this is the symbol of Kalachakra.

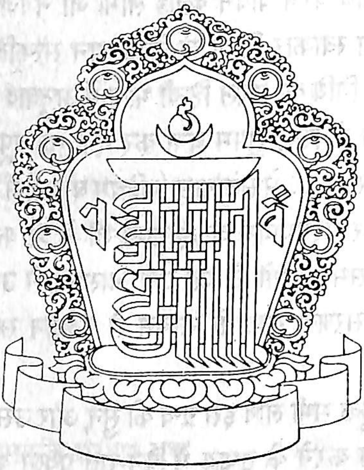

༄ རྣམ་བཅུ་དབང་ལྡན།

"Namchu Wangden" is the mantra of Kalachakra. It is a stacked form of 'Hang-Ksha-ma-la-wa-ra-ya'. It is believed that anyone who keeps this in the house or on person will be protected from all types of inauspicious conditions.

दो शब्द

लोक मे बुद्ध का उत्पाद दुर्लभ है, किन्तु उससे भी अधिक दुर्लभ अमृतरूपी धर्म-प्रवचन होता है। इस कालक्रम में परम पावन पूज्य चौदहवें दलाई लामा तेनजिन ग्याछो जी ने अपने ही जीवन-काल में देश-विदेश के असंख्य विनयजनों के हित के लिए अनुत्तर-तन्त्र के 'कालचक्र-अभिषेक' से लगातार अभिषिक्त किया, जो न केवल अपने आप में एक अनुपम एवं विशिष्ट लीला है बल्कि चारों ओर से संत्रस्त मानव जीवन और अस्त्र-शस्त्रों से भयविह्वल संसार को जीवित रहने के लिए एक आशा की किरण प्रदान करती है।

अब तक परम पावन दलाई लामा जी ने १८ बार कालचक्र अभिषेक प्रदान किया है। जिसमें से ७ बार हिमालय के हजारों श्रद्धावानों को अभिषेक देना तो उनकी असीम अनुकम्पा का ही निदर्शन है। विशेषतः यह १९वीं अभिषेक भी लाहुल के मुख्यालय केलङ के समीप होने जा रहा है। हिमालय के वे भाग्यशाली विनेयजन धन्य हैं।

हिमालय के अधिकतर क्षेत्रों में आने वाले लोग बहुलतया हिन्दी-भाषी हैं। लेकिन अभी तक कालचक्र के अभिषेक की विधि का हिन्दी-अनुवाद सामानय जनता के लिए सुलभ नहीं है। अतः इसको ध्यान में रखकर श्री ताशी पलजोर, अध्यक्ष हिमालय बोद्ध संस्कृति संरक्षण सभा, जिसपा कालचक्र संयोजन मण्डल के अनुरोध पर यह अनुवाद अल्प ही समय में सम्पादित हुआ है। फिर भी यह उन विनेयजनों के लिए बहुत ही सहायक सिद्ध होगा। हम प्रो० रामशंकर त्रिपाठी के आभारी हैं, उन्होंने विशेष ध्यान देकर अनुवाद का संशोधन किया। हम कम्प्यूटर द्वारा मुद्रित करंने के लिए श्री एम० एल० सिंह को भी साधुवाद देते हैं। तथा उन सभी महानुभावों के भी हम कृतज्ञ हैं, जिनके अदृश्य सहयोग से इस कार्य की सम्पन्नता में मदद मिली है।

अनुवादक-मण्डल

सारनाथ
१० जुलाई, १९९४

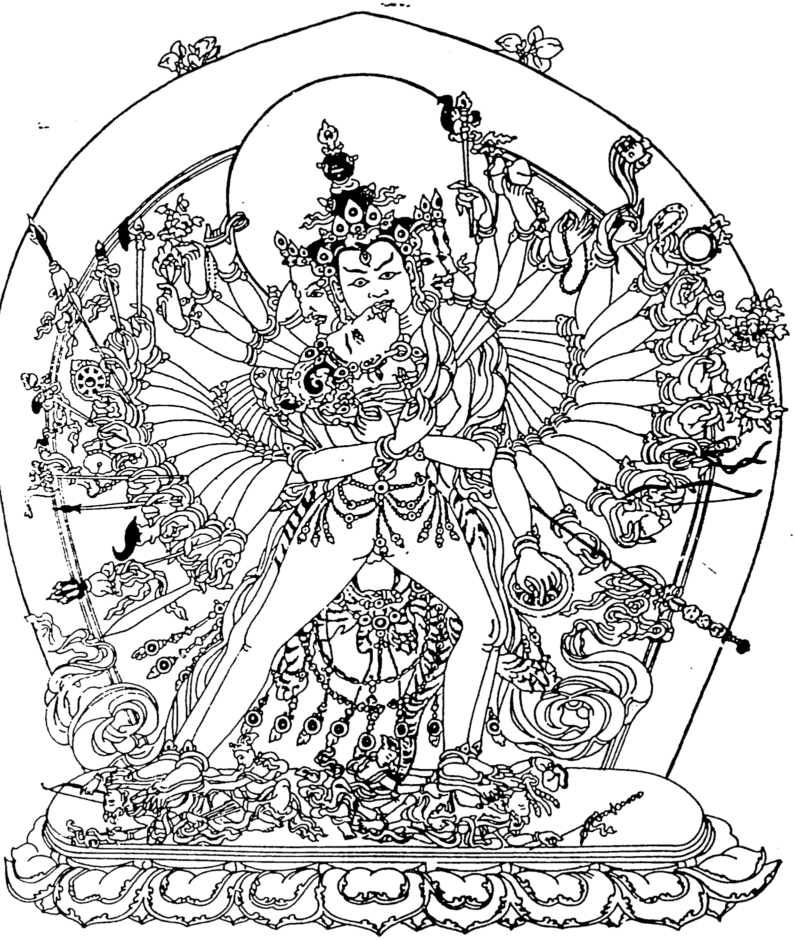

༄ དཔལ་དུས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ལ་ན་མོ།།

This is the Kalachakra deity in which form the Buddha taught the Kalachakra tantra. It is a symbolic form representing the ultimate truth, which is the non-dual nature of internal and external cosmos.

नमः सर्वज्ञाय

कालचक्र अभिषेक विधि

[एक स्फुट प्रकाश]

मङ्गलाचरण

नमः श्रीकालचक्राय शून्यता–करुणात्मने ।
त्रिभवोत्पत्तिक्षयाभावज्ञानज्ञेयैकमूर्तये ॥

श्रीकालचक्र से अभिन्न, महाकारुणिक भट्टारक सद्गुरु विमलपादपद्म की प्रणामपूर्वक शरण में जाता हूँ । वे साधारण और असाधारण अशेष सिद्धियाँ प्रदान करें ।

ओं प्रवेशय भगवन् महासुखमोक्षपुरं सर्वसिद्धिसुखप्रदं परमसुख–उत्तमसिद्धये जः हूँ वं होः प्रसिद्धये स्वाहा ।

जाति, जरा, मरण रूपी नक्र, मकर आदि भयों से युक्त भवसागर से मुक्त, महासुख–महाबोधि के प्रदर्शक तुम मेरे एकमात्र शास्ता हो । महानाथ (होने) की कामना है, (अतः) आप मुझे वह समय दें, मुझे बोधिचित्त दें, बुद्ध, धर्म, संघ (रूपी) त्रिशरण भी दें तथा हे महानाथ, मुझे महामोक्ष रूपी श्रेष्ठ नगर में प्रवेश कराएं ।

ओं सर्वतथागता अनुत्तरबोध्यलङ्कारवस्त्रपूजामेघ–समुद्रस्फरण–समयश्रिये हूँ । ओं वज्ररक्ष हँ । ओं वज्र–उष्णीष हूं फट् । ओं द्वादशाङ्गनिरोधकारिणि हूँ फट् । आः खँ वीर हूँ ।

षडक्षर मन्त्र का जप करें ।

वज्र और घण्टा धारण किए हुए स्वयं नीलवर्ण कालचक्र कर्त्री और कपाल धारण की हुई नीलवर्णा विश्वमाता से

आलिङ्गित प्रत्यालीढ मुद्रा में एक क्षण में विराजमान हुए । उनके हृदय में राहुमण्डल पर कृष्ण हुं, कण्ठ में सूर्यमण्डल पर रक्त आः, मस्तक पर चन्द्रमण्डल पर श्वेत ओं है । इन तीन अक्षरों की प्रभा से काय प्रकाशित हुआ ।

अये तुम कौन हो ? तुम्हारी किसमें रुचि है ?

मैं भाग्यशाली हूँ, मेरी महासुख में रुचि है ।

भव-भय को हरनेवाले, भव-दोषों से अनवलिप्त, सभी सम्पत्तियों के अधिपति (भगवन्) मैं आपके चरणों की शरण में जाता हूँ । अक्षय संसार के भयों से भीत मेरा अन्य कोई शरण नहीं है, अतः महा-अनुकम्पा करके आज मुझे कृतार्थ करें ।

आज से अक्षय संसार से भयभीत मैं शीघ्र जिनों (बुद्धों) की शरण में जाता हूँ । आपके चरण-कमल से निश्चित ही भव-भय दूर होकर मेरे काय, वाक् और चित्त शुद्ध होंगे । मैं त्रिरत्न की शरण में जाता हूँ । सभी पापों का परिशोधन कर मैं जगत् के (सभी) पुण्यों का अनुमोदन करता हूँ तथा बुद्ध-बोधि का अन्तर्मन से ग्रहण करता हूँ ।

अवैवर्तिक परमचक्र-अभिषेक मुझे प्रदान करें । नाथों, चक्रदेवों का वही आचार्य-कर्म है, वही सभी बुद्धों का समय है, उस उत्तम गुह्यसंवर को मुझे कहें । सभी सत्त्वों के अर्थों (हितों) की सिद्धि के लिए मैं सदैव गुरु होऊँ । सभी बुद्ध और बोधिसत्त्व मेरी ओर अवधान दें । मैं अमुक नामवाला आज से लेकर बोधिमण्ड की प्राप्ति पर्यन्त

त्रैकालिक नाथों ने जैसी बोधि निश्चित की है ।
(उसके लिए) मैं अनुत्तर बोधिचित्त का उत्पाद करूँगा ।

शील शिक्षा, पुण्यसम्भार सञ्चय एवं सत्त्वार्थ क्रिया
-ये तीन शील है । इनमें से प्रत्येक का मैं सदा दृढ़ता से पालन करूँगा ।

इष्ट वज्र में वज्र, घण्टा, मुद्रा और गुरु को शिरसा धारण करूँगा, रत्न (वज्र) में दान करूँगा, चक्र में परम जिनों के समय का पालन करूँगा, खड्ग में पूजा करूँगा, स्फुट पद्म कुल (गोत्र) में संवर का पालन करूँगा, सत्त्वों की विमुक्ति हेतु जिनोत्पादक कुल में बोधि का उत्पाद करूँगा ।

अमुक्तों को मुक्त करूँगा
अपारगतो को पार करूँगा ।
अनाश्वस्तों को आश्वस्त करूँगा
(तथा सभी) सत्त्वों को निर्वाणारूढ करूँगा ॥

हिंसा, असत्य, परस्त्री, परद्रव्य और मद्य का त्याग करें-ये पांच पाप हैं । ये संसार में वज्रपाश हैं और स्वपुण्यविघातक हैं । जो जिस समय भी आए, उन्हें देव और मनुष्यों के गुरु के नाम से दान करें- विश्व प्रभु का यह वचन संसारभय का नाशक है, जिसका तुम्हारे द्वारा पालन होना चाहिए ।

द्यूतक्रीडा, सावद्यभोजन, भ्रष्ठपाठ, भूत-असुर और शक्र धर्म;

गो, बाल, स्त्री, पुरुष, तथा देव-मनुष्य के गुरु का बध-

ये पाँच (कदापि) नहीं करूँगा ।

मित्र, क्षत्रिय, देव-मनुष्य के गुरु, संघ एवं श्रद्धावान् के प्रति द्वेष नहीं करूँगा ।

इन्द्रियों का आसक्तियुक्त होना- इस प्रकार भवाधिपतियों के ये २५ व्रत हैं ।

संसार भय विनाशक ये पूरे २५ व्रत हैं । विश्वप्रभु के वचनानुसार मैं सदा इनका पालन करूँगा ।

समस्त सत्त्वों के हितार्थ 'बुद्धत्व प्राप्त करूँगा' -इस प्रकार का वही सांवृतिक प्रणिधान चित्त हृदय में पूर्ण चन्द्रमण्डल

के रूप में परिणत हुआ । सर्वधर्मनिःस्वभावता शून्यता और स्वचित्त की एकरसता रूपी परमार्थ बोधिचित्त चन्द्रमण्डल के ऊपर पंचमुखी श्वेतवज्र के रूप में परिणत हुआ ।

ओं सर्वयोगचित्तमुत्पादयामि । ओं सुरते समयसत्त्व होः सिद्धचवज्र यथासुखम् ।

आज तुम समस्त तथागतों द्वारा अधिष्ठित हुए । तुम्हें यह सर्व तथागतों का परम गुह्यमण्डल, उन्हें नहीं कहना चाहिए, जो मण्डल में अप्रविष्ट हैं, तथा अश्रद्धावान् को भी नहीं कहना चाहिए ।

ओं विघ्नान्तकृत् हूँ । आः खँ वीर हूँ । ओं महारत सुदृढो सुतोषो सुसुषो वज्रसत्त्व अद्य सिद्धय मां ।

स्वयं क्षणभर में अक्षोभ्य हुए ।

ओं सर्वतथागतपूजोपस्थानाय आत्मानं निर्यातयामि । सर्वतथागतवज्रसत्त्व अधितिष्ठस्व मां हूँ ।

समस्त तथागतों की पूजा और उपासना के लिए मैं स्वयं को अर्पित करता हूँ । इसलिए समस्त तथागतों के स्वरूप वज्रसत्त्व के द्वारा मुझे अधिष्ठित करें । इस प्रकार पूर्वी द्वार से अध्येषणा करने के कारण समस्त तथागतों की पूजा, उपासना में सामर्थ्य अधिगत करने के लिए अधिष्ठित करें । स्वयं अमोघसिद्धि के रूप में परिणत हुए ।

ओं सर्वतथागतपूजाकर्मणे आत्मानं निर्यातयामि सर्वतथागतवज्रकर्म कुरु माम् ।

सर्वतथागतों के पूजाकर्म के लिए स्वयं का अर्पण करने से सभी तथागत मुझे वज्रकर्मिक बनाएं । इस प्रकार पूर्वी द्वार से अध्येषणा करने से सभी तथागतों की पूजा और कर्मसम्भार में

समर्थ बनाने के लिए अधिष्ठित करें । स्वयं रत्नसम्भव के रूप में परिणत हुए ।

ओं सर्वतथागतपूजाभिषेकाय आत्मानं निर्यातयामि सर्वतथागतवज्ररत्न अभिषिञ्च माम् ।

सभी तथागतों की पूजा एवं अभिषेक करने के लिए अपने को अर्पित करता हूँ । इसलिए सभी तथागत मुझे वज्ररत्न का अभिषेक प्रदान करें । ऐसी दक्षिण द्वार से अध्येषणा करने के कारण सभी तथागतों की पूजा और अभिषेक में समर्थ बनाने के लिए अधिष्ठित करें । स्वयं अमिताभ के रूप में परिणत हुए ।

ओं सर्वतथागतपूजाप्रवर्तनाय आत्मानं निर्यातयामि सर्वतथागतवज्रधर्म प्रवर्तय माम् ।

समस्त तथागतों की पूजा के प्रवर्तन के लिए स्वयं का अर्पण करता हूँ । अतः सभी तथागत मुझमें वज्रधर्म का प्रवर्तन करें । ऐसी उत्तरद्वार से अध्येषणा करने से सभी तथागतों की पूजा एवं धर्म के प्रवर्तन में समर्थ बनाने के लिए अधिष्ठित करें ।

ओं सर्वबुद्धपूजोपस्थानाय आत्मानं निर्यातयामि सर्वतथागतवज्रवैरोचन अधितिष्ठ माम् ।

समस्त तथागतों की पूजा एवं सेवा के लिए स्वयं को अर्पित करता हूँ । अतः सभी तथागतों के स्वभावभूत वैरोचन मुझे अधिष्ठित करें । ऐसी पश्चिमी द्वार से अध्येषणा करने के कारण सभी तथागतों की पूजा एवं सेवा में समर्थ बनाने हेतु अधिष्ठित करें ।

ओं गुरुचरणपूजोपस्थानाय आत्मानं निर्यातयामि सर्वसत्त्वपरित्राणाय आत्मानं निर्यातयामि ।

आज तुम सभी तथागतों के गोत्र (कुल) में प्रविष्ट हुए । अतः मैं आप में वज्रज्ञान का उत्पाद करूँगा, जिस ज्ञान से तुम्हें समस्त तथागतों की सिद्धियाँ प्राप्त होंगी, तब अन्य सिद्धियों की तो बात ही क्या है ! तुम्हें भी मण्डलदर्शन न करने वालों के समक्ष इसे नहीं कहना चाहिए, अन्यथा तुम्हारे समय की हानि होगी ।

यह तो तुम्हारा समयवज्र है । यदि इस विधि को हर किसी को बताओगे तो इससे तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे ।

ओं, आज स्वयं वज्रसत्त्व तुम्हारे हृदय में संप्रतिष्ठित हुए । यदि इस विधि का बखान किया तो तत्काल उनसे विच्छेद होगा । यह तो तुम्हारा नरकोदक है, जो समय का उल्लंघन होने पर जला देता है । समय का पालन करने पर सिद्धि प्राप्त होगी । वज्रामृत उदक का पान करें ।

ओं वज्रोदक ठः

आज के पश्चात् तुम्हारा वज्रपाणि मैं हूँ । मैं कहूँ कि यह करो, तो तुम्हें करना चाहिए, तुम मेरी अवहेलना न करना । यदि करोगे तो भय से मुक्त न होते हुए तथा मृत्यु के अवसर का निर्माण करते हुए नरक में पतित होओगे ।

सभी तथागत मुझे अधिष्ठित करें । श्रीकालचक्र को मुझमें आवाहित करें । शून्यता .... स्वयं शून्यता में परिणत हुई । शून्यतास्वभाव से स्वयं 'हुँ' और 'वज्र' से उत्पन्न वज्रशक्ति—कृष्णवर्ण, मुख, पाणि, अंगुलि आदि सभी लक्षणों से युक्त, सिर और कपाल की माला धारण किए हुए, नागों से अलङ्कृत तथा सभी हस्त आयुधों से परिपूर्ण के रूप में परिणत हुए ।

उनकी नाभि में (स्थित) 'लँ'-कार से चक्राङ्कित चतुष्कोण पीत पृथ्वीमण्डल में कालाग्नि के ऊपर पीत 'हों', हृदय में 'यँ'-कार से दो कम्पित पताकाओं से अङ्कित कृष्ण धनुषाकार

वायुमण्डल में राहु के ऊपर कृष्ण 'हुँ', कण्ठ में 'रँ'-कार से रत्नाङ्कित त्रिकोण अग्निमण्डल में सूर्य के ऊपर रक्त 'आः', ललाट में 'वँ'-कार से कलशाङ्कित श्वेत वर्तुल जलमण्डल में चन्द्रमण्डल के ऊपर श्वेत 'ओं', चार अक्षरों की प्रभा और गुरु से अभिन्न प्रधान के हृदय में (स्थित) 'हुँ' रश्मि से चार वज्रों को आमन्त्रित किया और वे चार अक्षरों में विलीन हुए ।

पादतल के नीचे (स्थित) 'यँ'-कार से वायुमण्डल द्वारा प्रज्वलित 'रँ'-कार से 'रँ'-काराङ्कित रक्त त्रिकोण अग्निमण्डल के ऊपर दोनों पादतलों में (स्थित) प्रस्फुटित रश्मियों से युक्त रक्त 'झै' में परिणत हुआ । गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयरश्मि के पड़ने से वायु उद्वेलित होकर अग्नि के प्रज्वलित होने से पाद-छिद्र में प्रविष्ट 'झै'-रश्मि से चार अक्षरों की उद्वेलित प्रभा से समस्त काय आप्लावित हुआ ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयरश्मि के द्वारा समस्त बुद्ध, भगवान् श्रीकालचक्र और क्रोधेन्द्र के आकार में आमन्त्रित हुए, जो समस्त आकाश में परिपूर्ण होकर स्वयं के काय में प्रविष्ट हुए ।

ओं आः र र र र ल ल ल ल वज्र आवेशय हुं ।

ओं आः हुं ।

स्वयं के मस्तक पर 'ओं', हृदय में 'हुं', उष्णीष में 'हँ', नाभि में 'होः', कण्ठ में 'आः', गुह्य में 'क्षः'- इस षट् कुल प्रज्ञा और उपाय द्वारा रक्षा करना चाहिए ।

षडाक्षर......... ।

इस सम्यक् मण्डल में मैंने शिष्य का प्रवेश कराया है । इन देव-कुलों का क्रम जैसा पुण्य है, तदनुसार हो, जिसकी सिद्धि जैसे होगी, जिस कुल का वह पात्र होगा, पुण्य की शक्ति जैसे होगी, उस प्रकार का मण्डल हो जाए ।

त्रां ओं सर्वतथागतकुलविशोधनि स्वाहा । ओं प्रतिगृह्णस्त्वं इमं सत्त्वमहाबल ।

कालचक्र, आज आप चक्षु-उन्मीलन का यत्न करें । उन्मीलन से समस्त दिख जाता है, क्योंकि वज्र-चक्षु अनुत्तर होता है ।

ओं दिव्यनेत्राय अः उद्घाटय स्वाहा ।

सम्प्रति श्रद्धाबल से (तुम) इस मण्डल को देखो, तुम बुद्धकुल में उत्पन्न हो गए, मन्त्र-मुद्रा द्वारा अधिष्ठित हुए, तुम समस्त सिद्धियों से सम्पन्न हुए, तुम परम समय-रूप हो गए, वज्र-पद्म की शीर्ष क्रीडा से गुह्य मन्त्र की साधना करें ।

हे वज्र पश्य

स्वयं मेरे द्वारा अशेष मण्डल को प्रत्यक्षतया देखा गया । ओं वज्रमण्डल महामण्डल में मैं प्रवेश करता हूँ । योगमण्डल महामण्डल को मैंने देखा, गुह्यमण्डल महामण्डल में मैं अभिषिक्त हुआ ।

समय होः होः होः होः ।

बोधिवज्र ने बुद्ध की जैसे महापूजा की, उसी तरह मुझे भी विमुक्ति के लिए आज आकाशवज्र प्रदान करें ।

षडाक्षर.......... ।

ओं सर्वपापदहनवज्राय वज्रसत्त्वस्य सर्वपापं दह स्वाहा ।

द्र० । पुष्प । अर्घ्य । दीप । षडाक्षर ।

गुरु अपने वज्रसहित दाहिने हाथ से मेरे हाथ के बाएं से ले जाकर मण्डल को सामने से देखकर दक्षिण से प्रदक्षिणा कर

उत्तर द्वार में काय-मुख को अभिमुख करके अभिषेक आसन पर स्थित हुए ।

गुरु से अभिन्न वज्रकायरूप कालचक्र को कायविशुद्धि के लिए अभिषेक की प्रार्थना के लिए दक्षिणास्वरूप मण्डल अर्पण करता हूँ ।

मण्डल............

ओं हँ हाँ हिँ हौँ हिँ ह्लौँ हुँ हूँ ह्लिँ ह्लौँ आ ई ॠ ऊ लृ वज्रडाकिन्यो वज्रामृतघटैरभिषिञ्चन्तु मां स्वाहा ।

षडाक्षर.......... ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुँ'-रश्मि के द्वारा स्वयं आमन्त्रित होकर (गुरु के) मुख में प्रविष्ट हुए । काय के आकार के माध्यम से वज्रमार्ग से मातृ-पद्म में गलित विन्दु शून्यता में परिणत हुआ । शून्यता स्वभाव से 'ओं' और पद्म से उत्पन्न श्वेत वज्रकाय श्वेत, कृष्ण और रक्त मुख अर्थात् त्रिमुख और षड्भुजाओं में दक्षिण की तीन भुजाओं में मुद्गर, शूल और त्रिशूल तथा बाईं ओर की तीन भुजाओं में शतदल पुण्डरीक, चक्र एवं माला धारण किए हुए पाण्डरा से आलिङ्गित हुआ ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुँ'-रश्मि के द्वारा भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूँ वँ होः हिः ।

समरस हुए ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुँ'-रश्मि द्वारा दशों दिशाओं में स्थित पिता, माता, पुत्र एवं भार्या सहित समस्त जिन (बुद्ध) आमन्त्रित हुए ।

वज्रभैरव, आकर्षय जः ।

गन्धं.......... ।

जगत् परित्राण के लिए बुद्ध को जैसे वज्री के द्वारा गुणाकर–अभिषेक प्रदान किया गया; वैसे इसे भी प्रदान करें । ऐसी प्रार्थना करने से सभी माता–पिता जिन आदि समाहित हुए । महारागाग्नि के द्वारा गलित हुए । गुरु से अभिन्न प्रधान के उष्णीष से प्रविष्ट हुए । वज्रमार्ग से निःसृत बोधिचित्त द्वारा स्वयं कायवज्री को अभिषिक्त किया गया । मातृ के पद्म से निकलकर अभिषेक आसन पर स्थित हुआ ।

ओं प्रज्ञापारमिते हुँ हूँ फट् ।

ओं लोचनी.......... । ओं मामकी.......... । ओं पाण्डरा.......... । ओं तारा.......... । स्वयं एवं कलश जल षडाक्षरी (मन्त्र) द्वारा शोधित हुए ।

शून्यता के द्वारा स्वयं स्वकाय, पञ्च धातु एवं कलश जल शून्यता में परिणत हुए । शून्यता स्वभाव से काय की आकाश धातु के और शंख धर्म के जल से मिश्रित ऊपर नीचे का कलश 'आ' एवं वज्रोत्पादित हरित वज्रधात्वीश्वरी हरित–रक्त–श्वेत त्रिमुख, छह भुजाओं में दाहिनी ओर की तीन भुजाओं में वज्र, कर्तरी एवं परशु तथा बाईं ओर की तीन भुजाओं में वज्र–घण्टा, कपाल एवं ब्रह्मशीर्ष धारण की हुई वज्रसत्त्व द्वारा आलिङ्गित ।

काय की वायुधातु और शंखधर्म के जल से मिश्रित पूर्व एवं पूर्व–दक्षिण का कलश–जल 'ई' तथा खड्गोत्पादित कृष्णतारा (इनके) कृष्ण कृष्ण–रक्त–श्वेत त्रिमुख । छह भुजाओं में दाहिनी ओर की तीन भुजाओं में खड्ग, कर्तरी एवं त्रिशूल तथा बाईं ओर की तीन भुजाओं में कवच, कपाल और श्वेत खट्वाङ्ग धारण की हुई वैरोचन द्वारा आलिङ्गित ।

काय की अग्निधातु एवं शंखधर्म के जल से मिश्रित दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम का कलश जल 'ऋ' एवं रत्न से

उत्पन्न पाण्डरवासिनी, रक्त रक्त–श्वेत–कृष्ण त्रिमुख, छह भुजाओं में दाहिनी तीन भुजाओं में (क्रमशः) अग्निबाण, वज्रांकुश एवं सशब्द डमरू, बाई ओर की तीन भुजाओं मे धनुष, वज्रपाश एवं नवाङ्ग रत्न धारण की हुई अमिताभ द्वारा आलिङ्गित ।

काय के अप्–धातु एवं शंखधर्म के जल से मिश्रित उत्तर एवं उत्तर–पूर्व का कलश जल 'ऊ' तथा पद्म से उत्पन्न श्वेत मामकी, श्वेत–कृष्ण–रक्त त्रिमुख, छह भुजाओं में दाहिनी ओर की तीन भुजाओं में मुद्गर, शूल एवं त्रिशूल तथा बाई तीन भुजाओं में शतदल पुण्डरीक, आदर्श और माला धारण की हुई रत्नसम्भव द्वारा आलिङ्गित ।

काय की पृथ्वी धातु और शंख धर्म के जल से मिश्रित पश्चिम एवं पश्चिमोत्तर का कलश जल 'लृ' तथा चक्रोत्पन्न पीत लोचना, पीत–श्वेत–कृष्ण त्रिमुख, छह भुजाओं में दाहिनी तीन भुजाओं में चक्र, दण्ड एवं भैरव वज्र तथा बाई ओर की तीन भुजाओं में शंख, वज्रपाश एवं सशब्द घण्टा धारण की हुई अमोघसिद्धि द्वारा आलिङ्गित ।

उनके मस्तक पर 'ओं', कण्ठ में 'आः', हृदय में 'हुँ', तथा नाभि में 'होः' । हृदयस्थ 'हुँ' से रश्मि प्रस्फुटित हुई । भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूँ वं होः हिः ।

अपने–अपने समयी से समरस हुए ।

ओं आ ई ॠ ऊ लृ पञ्चधातुविशोधनि स्वाहा ।

इस प्रकार माताओं द्वारा अभिषेक द्रव्य एवं देवता अभिषिक्त हुए । क्रमशः अक्षोभ्य, अमोघसिद्धि, रत्नसम्भव, अभिताभ एवं वैरोचन द्वारा मुद्रित किए गए ।

गन्धं.......... ।

माता एवं पिता के समाहित होने से महारागाग्नि के द्वारा गलित बोधिचित्त कलश जल में परिणत हुआ । गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुँ'-रश्मि के द्वारा अभिषेक देव आकाशव्यापी जिन माता-पिता, पुत्र, भार्या सहित आमन्त्रित हुए ।

वज्रभैरव आकर्षय जः ।

गन्धं.......... ।

वज्री के द्वारा बुद्ध को .... ।

इस प्रकार अध्येषणा करने से आकाश व्यापी जिन, माता-पिताओं के द्वारा अभिषेक का विचार किया गया । बोधिसत्त्वों के द्वारा मङ्गलाचरण किया गया । रूपवज्री आदि के द्वारा पूजा करते हुए पुष्प आदि की वर्षा की गई । क्रोधी-क्रोधिनियों के द्वारा विघ्नों का अपसारण किया गया । साधित मण्डल के भीतर विराजमान माताओं के द्वारा गृहीत बोधिचित्तामृत से परिपूर्ण किञ्चित् वक्र श्वेत कलश के द्वारा अभिषिक्त किया गया ।

माताओं के द्वारा .... ।

पञ्च बुद्धों के द्वारा मुकुट धारण कर .... ।

दश शक्तियों के द्वारा पट्टाङ्ग धारण कर .... ।

प्रधान युगनद्ध द्वारा वज्र एवं घण्टा धारण कर .... ।

सत्त्व और सत्त्वाओं द्वारा अङ्गुष्ठ वज्र धारण कर ..... ।

क्रोधी-क्रोधिनियों द्वारा वलय धारण कर ...... ।

वज्रसत्त्व एवं प्रज्ञापारमिता द्वारा आयुधों को धारण कर अभिषिक्त किया गया ।

जो मङ्गल समस्त सत्त्वों के हृदय में स्थित है तथा जो सर्वात्मक, सभी कुलों के श्रेष्ठ अधिपति, अशेषसत्त्वों के

उत्पादक महासुख हैं, उनके द्वारा आज तुम अभिषिक्त हुए । श्रेष्ठ मङ्गल हो ।

सम्पत्तियुक्त स्वर्णपर्वतसदृश, त्रिलोकनाथ, त्रिमलपरिहारक, प्रफुल्लित शतदल पद्मोपमगमुख बुद्ध द्वारा आज तुम्हें शम प्राप्त हुआ । मङ्गल हो ।

उन (बुद्धों) के द्वारा प्रदर्शित, परम श्रेष्ठ, अविचल, त्रिलोकप्रसिद्ध, देव-मनुष्यों द्वारा पूजित, प्रजाओं को शान्तिप्रदायक सद्धर्म द्वारा आज तुम्हें शम प्राप्त हुआ । मङ्गल हो ।

परम संघ, धर्मनिष्ठ, श्रवण मङ्गल से समृद्ध, सुरासुर मनुष्यों द्वारा पूजनीय, ह्री, ज्ञान और श्री के आश्रय गणोत्तम द्वारा आज तुम्हें शम प्राप्त हुआ । मङ्गल हो ।

अभिषेक महावज्र, त्रिलोक पूजनीय, समस्त बुद्धों के त्रिगुह्य-स्थान से उत्पन्न तुम्हें अभिषेक प्रदान करें।

ओं आ ई ॠ ऊ ॡ पञ्चधातुविशोधनि स्वाहा ।

इस प्रकार छिड़कने और धोने के द्वारा दुःख एवं मल विशुद्ध हुए । पीने से महासुख का अनुभव हुआ । काय के पाँच धातु माताओं में परिणत हुए । उनकी रश्मियों के द्वारा आमन्त्रित मण्डलस्थ पाँच माताएं स्वकाय की पाँच माताओं में विलीन हुई ॥ अभिषेक देवताओं को भी आकर्षित कर स्वकीय पञ्च धातुएं प्रकट पाँच माताओं में विलीन हुई ।

गन्धं........ ।

यह तो उत्पत्ति के अनन्तर माता द्वारा बालक का स्नान कराने के समान है । पाँच धातुओं के मल का प्रक्षालन हुआ । पाँच माताओं में आश्रित सिद्धियों और कर्मसाधनों में अधिकार प्राप्त हुआ । पाँच माताओं के बीज सन्तति में अवरोपित हुए । प्रथम भूमि फल प्राप्ति में सामर्थ्य प्राप्त हुआ ।

पुनश्च, पाँच स्कन्धों के मलों के विशोधक मुकुटाभिषेक प्राप्ति की दक्षिणा के रूप में .... ।

मण्डल .... ।

ओं अँ इ र ओं ऊँ लृँ सर्वबुद्धवज्रमुकुटं माम् पञ्चबुद्धात्मकं बन्धयन्तु हुँ हुँ फट् ।

स्वयं एवं मुकुट षडाक्षर .... ।

शून्यता के द्वारा स्वकीय पांच स्कन्ध, अभिषेक द्रव्य एवं मुकुट शून्यता में परिणत हुए । शून्यता स्वभाव से स्वयं का विज्ञान स्कन्ध एवं हरित मुकुट 'अ' और वज्रोत्पादित हरित अक्षोभ्य हरित–रक्त–श्वेत त्रिमुख । छह हाथों में दाहिने ओर के तीन हाथों में वज्र, कर्तरी एवं परशु तथा बाई ओर के तीन हाथों में वज्रघण्टा, कपाल एवं ब्रह्मशीर्ष धारण किए हुए प्रज्ञापारमिता द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय संस्कार स्कन्ध और कृष्ण मुकुट 'इ' एवं खड्गोत्पादित कृष्ण अमोघसिद्धि, कृष्ण–रक्त–श्वेत त्रिमुख । छह हाथों में दाहिनी ओर के तीन हाथों में खड्ग, कर्तरी एवं त्रिशूल तथा बाई ओर के तीन हाथों में कवच, कपाल एवं श्वेत खट्वाङ्ग धारण किए हुए लोचना द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय वेदना स्कन्ध और रक्त मुकुट 'ऋ' एवं रत्नोत्पादित रक्त रत्नसम्भव, रक्त–श्वेत–कृष्ण त्रिमुख । छह हाथों में दाहिनी ओर के तीन हाथों में अग्निबाण, वज्राङ्कुश एवं सशब्द डमरू तथा बाई ओर के तीन हाथों में धनुष, वज्रपाश एवं नवाङ्ग रत्न धारण किए हुए, मामकी द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय संज्ञा स्कन्ध और श्वेत मुकुट 'उ' और पद्मोत्पादित श्वेत अभिताभ, श्वेत–कृष्ण–रक्त त्रिमुख । छह हाथों में दाहिने ओर के तीन हाथों में मुद्गर, शूल एवं त्रिशूल तथा बाई ओर के तीन हाथों में शतदल पद्म, आदर्श एवं माला धारण किए हुए, पाण्डरवासिनी द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय रूपस्कन्ध और पीतमुकुट 'लृ' एवं चक्रोत्पादित पीत वैरोचन, पीत–श्वेत–कृष्ण त्रिमुख । छह हाथों में दाहिने ओर के तीन हाथों में चक्र, दण्ड एवं भैरव वज्र तथा बाईं ओर के तीन हाथों में शंख, वज्राङ्कुश एवं सशब्द घण्टा धारण किए हुए, तारा द्वारा आलिङ्गित ।

उनके मस्तक पर 'ओं', कण्ठ में 'आः', हृदय में 'हुँ' और नाभि में 'स्व' है । हृदय के 'हुँ' से रश्मि प्रस्फुटित हुई । भावना के अनुरूप ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूँ वँ होः हिः ।

अपने अपने समयी से समरस हुए ।

ओं आ ई ॠ ऊ लृ पञ्चधातुविशोधनि स्वाहा

इस प्रकार माताओं के द्वारा अभिषेक द्रव्य देव अभिषिक्त किए गए । (क्रमशः) वज्रसत्त्व, अमोघसिद्धि, रत्न सम्भव, अमिताभ एवं वैरोचन द्वारा मुद्रित किये गए ।

गन्धं.......... ।

माता–पिता के समाधिस्थ होने से महारागाग्नि के गलन से उत्पन्न अभिषेक द्रव्य मुकुट में परिणत हुए । गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हूँ' रश्मि के द्वारा आकाश व्यापी जिन (बुद्ध) पिता–माता, पुत्र एवं भार्या सहित अभिषेक देव आमन्त्रित हुए ।

वज्रभैरव आकर्षय जः

गन्धं.......... ।

ऐसी अध्येषणा करने से आकाशस्थ जिन (बुद्ध), पिता–माताओं द्वारा अभिषेक का विचार किया गया । बोधिसत्त्वों द्वारा मङ्गलाचरण का वाचन किया गया । रूपवज्री आदि के द्वारा पूजा करते हुए पुष्प आदि की वर्षा की गई । क्रोधी एवं

क्रोधिनियों द्वारा विघ्नों का अपसारण किया गया । साधित मण्डल के भीतर विराजमान पञ्च बुद्धों द्वारा मुकुट ग्रहण कर अभिषेक किया गया ।

ओं अ इ ऋ उ लृ पञ्चतथागतपरिशुद्ध स्वाहा ।

इस प्रकार अभिषेक के द्वारा स्वकीय पाँच स्कन्ध पञ्च बुद्धों में परिणत हुए । उनकी रश्मियों द्वारा मण्डलस्थ पाँच बुद्धों से आमन्त्रित पाँच बुद्ध एक दीप से दूसरे दीप के जलने के समान स्व काय के पाँच बुद्धों में विलीन हुए । अभिषेक देव भी आकर्षित हुए तथा स्व काय के पाँच स्कन्ध प्रकट पाँच बुद्धों में विलीन हुए ।

गन्ध......... ।

यह तो बालक के चूड़ा रखने के समान है । पाँच स्कन्ध के मलों का प्रक्षालन हुआ । पाँच बुद्धों द्वारा सिद्धि के साधन में अधिकार प्राप्त हुआ । पञ्च बुद्धों के बीज सन्तति में स्थापित हुए ।

द्वितीय भूमि फल प्राप्ति में सामर्थ्य उत्पन्न हुआ ।

इस प्रकार उत्तर दिशा की ओर कायमुख वाली (चार) भूमि पर दो अभिषेकों के द्वारा गर्भ में सर्वप्रथम धातु एवं स्कन्ध बनने के समान अपने काय के अशुद्ध भाग स्कन्ध एवं धातुएं विशोधित होकर तथागत-तथागती स्वरूप आवरणरहित होने से हुई तथा शक्ति स्थापित करने के लिए काय मल का प्रक्षालन हुआ तथा कायवज्र के बीज की स्थापना हुई । कायवज्र की सिद्धि के साधन में अधिकार प्राप्त हुआ ।

पुनश्च, दाहिनी ओर से प्रदक्षिणा के द्वारा दक्षिणी द्वार पर ले जाकर वाक्-मुख की ओर अभिमुख होकर अभिषेक-पीठ पर आरूढ हुआ । वाग्-वज्र से अभिन्न गुरु एवं कालचक्र को दश वायुओं के मल-विशोधक पट्टाङ्ग अभिषेक के लिए प्रार्थना की । दक्षिणा के रूप में ...... मण्डल .... ।

ओं अ आ अँ अः ह हा हँ हः फ्रें होः सर्वपारमिता मां वज्रपट्टं बन्धयन्तु हुँ हूँ फट् ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुँ'-रश्मि के द्वारा आकर्षित होकर स्वयं मुख में प्रविष्ट हुआ । कायाकार से घरम्परया वज्रमार्ग से होते हुए माता के पद्म में गलित विन्दु शून्यता में परिणत हुआ । शून्यता स्वभाव से 'आः' एवं रत्नोत्पादित रक्त वाग्वज्र; रक्त-श्वेत-कृष्ण त्रिमुख, छह हाथों में दाहिनी ओर के तीन हाथों में अग्निबाण, वज्राङ्कुश एवं सशब्द डमरू तथा बाईं ओर के तीन हाथों में धनुष, वज्रपाश एव नवाङ्ग (रत्न) धारण क्रिए हुए, मामकी द्वारा आलिङ्गित ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुँ'-रश्मि के द्वारा भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूं वं होः हिः ।

समरस हुए ।

गुरू से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हूँ'-रश्मि के द्वारा पिता-माता, पुत्र, भार्या सहित दश दिशाओं के जिन (बुद्ध) आमन्त्रित हुए ।

वज्रभैरव आकर्षय जः ।

गन्धं.......... ।

इस प्रकार की अध्येषणा से सभी जिन, माता-पिता आदि समाहित हुए । महारागाग्नि द्वारा गलित हुए । गुरु से अभिन्न प्रधान के उष्णीष से प्रविष्ट हुए । वज्रमार्ग से निःसृत बोधिचित्त के द्वारा स्वयं को वाग्वज्र का अभिषेक प्राप्त हुआ । माता के पद्म से निःसृत होकर अभिषेक-पीठ पर आरूढ़ हुआ ।

स्वयं एवं पट्टाङ्ग .... ।

स्वयं की दश वायुएं एवं पट्टाङ्ग शून्यता में परिणत हुए । शून्यता स्वभाव से स्वयं की 'समान' वायु एवं कूर्म (वायु), दो कृष्ण पट्टाङ्ग 'अ' 'ह' धूपपात्र एवं कृष्ण चामर से उत्पन्न कृष्णज्वाला कृष्ण-रक्त-पीत-श्वेत चतुर्मुखी । आठ हाथों में दाहिनी ओर के चार हाथों में धूप, चन्दन, केसर एवं कर्पूर-कस्तूरी मिश्रित पात्र, बाईं ओर के चार हाथों में घण्टा, पद्म, देववृक्षपुष्प एवं नाना पुष्पावलि धारण की हुई ।

कृष्ण धूमावती कृष्ण-रक्त-पीत-श्वेत चतुर्मुखी । आठ हाथों में आठ कृष्ण चामर धारण की हुई ।

स्व उदान वायु और कृकलास (वायु), दो रक्त पट्टाङ्ग अः हः, दीप एवं रक्त चामर से उत्पन्न रक्तज्वाला । रक्त-पीत-श्वेत-नील चतुर्मुखी । आठ हाथों में दाहिनी ओर के चार हाथों में दीप, हार, मुकुट एवं वलय तथा बाईं ओर के चार हाथों में वस्त्र, मेखला, कर्णाभूषण और नूपुर धारण की हुई ।

रक्त मरीचिका । रक्त-पीत-श्वेत-नील चतुर्मुखी । आठ हाथों में आठ रक्त चामर धारण की हुई ।

स्व व्यान वायु तथा देवदत्त (वायु), दो श्वेत पट्टाङ्ग अँ हँ, नैवेद्य एवं श्वेत चामर से उत्पन्न श्वेतज्वाला । श्वेत-कृष्ण-रक्त-पीत चतुर्मुखी । आठ हाथों में दाहिनी ओर के चार हाथों में दुग्ध, जल, उत्तम भैषज्य एवं मदिरापात्र तथा बाईं ओर के चार हाथों में अमृत, सिद्ध शव, अमृत फल एवं भोजन-पात्र धारण की हुई ।

श्वेत गगनालोका । श्वेत-कृष्ण-रक्त-पीत चतुर्मुखी । आठ हाथों में आठ श्वेत चामर धारण की हुई ।

स्व नाग वायु और धनञ्जय (वायु), दो पीत पट्टाङ्ग आ हा, शंखधर्म एवं पीत चामर से उत्पन्न पीतज्वाला । पीत-श्वेत-नील-रक्त चतुर्मुखी । आठ हाथों में दाहिनी ओर के चार हाथों में शंख, वेणु, मणि एवं डमरू तथा बाईं ओर के

चार हाथों में वीणा, मृदङ्ग, सशब्द दण्ड एवं ताम्र शंख धारण की हुई ।

पीतालोका । पीत-श्वेत-नील-रक्त चतुर्मुखी । आठ हाथों में आठ पीत चामर धारण की हुई ।

स्व प्राण वायु एवं हरित पट्टाङ्ग 'हो', वज्र से उत्पन्न हरित वज्रधात्वीश्वरी । हरित-रक्त-श्वेत त्रिमुखी । छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में वज्र, कर्तरी एवं परशु तथा बाएं तीन हाथों में वज्रघण्टा, कपाल एवं ब्रह्मशीर्ष धारण की हुई ।

स्व अपान वायु और नील पट्टाङ्ग 'फ्रें', और कर्तरी से उत्पन्न नील विश्वमाता .... ब्रह्मशीर्ष धारण की हुई ।

उनके मस्तक पर ओं, कण्ठ में आः, हृदय में हुँ, नाभि में होः, हृदयस्थ हुँ से रश्मि प्रस्फुटित हुई । भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूँ वँ होः हिः ।

अपने अपने समयी से समरस हुए ।

ओं आ ई ॠ ऊ ॡ पञ्चधातुविशोधनि स्वाहा ।

इस प्रकार माताओं द्वारा अभिषेक द्रव्यदेव को अभिषिक्त किया गया । वज्रसत्त्व द्वारा मुद्रित किया गया ।

गन्धं.......... ।

दश शक्तियों के गलित होने से उद्भूत अभिषेक द्रव्य पट्टाङ्ग में परिणत हुआ ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुँ'-रश्मि के द्वारा आकाशव्यापी जिन (बुद्ध), माता-पिता, पुत्र, भार्या सहित अभिषेकदेव आमन्त्रित हुए ।

वज्रभैरव .... ।

गन्धं.......... ।

इस प्रकार अध्येषणा से आकाशस्थ जिन (बुद्ध), माता–पिता..... । बोधिसत्त्वों द्वारा मङ्गलवाचन किया गया । रूपवज्री आदि के द्वारा पूजा करते हुए पुष्प आदि की वर्षा की गई । क्रोधी एवं क्रोधिनियों के द्वारा विघ्नों का अपसारण किया गया । साधित मण्डल.......... । दश शक्तियों के द्वारा पट्टाङ्ग ग्रहण कर अभिषेक किया गया ।

ओं अ आ अं अः ह हा हं हः होः फ्रें दश पारमितापरिपूरणि स्वाहा ।

इस प्रकार अभिषेक से स्वकीय दस वायुएँ दस शक्तियों में परिणत हुई । उनकी रश्मियों के द्वारा मण्डल की दश शक्तियाँ दीप..... अपने शरीर की दश शक्तियों में विलीन हुई तथा समस्त अभिषेक देवों को आकर्षित कर स्वकीय दश वायुएं प्रकटित दश वायुओं में विलीन हुई ।

गन्धं.......... ।

यह तो बालक का कर्णच्छेद करके आभूषण पहनाने के समान है । दस वायुओं के मल का विशोधन होकर कर्म का योग हुआ । दश शक्तियों के द्वारा अभिषेक सिद्धि के साधन में अधिकार प्राप्त हुआ । दश पारमिताओं की शक्ति स्थापित हुई तथा तृतीय भूमि प्रभाकरी की प्राप्ति में सामर्थ्य प्राप्त हुआ ।

पुनः दो नाड़ियों के विशोधक वज्र एवं घण्टा अभिषेक हेतु ...... मण्डल .... ।

ओं हूं होः विज्ञानज्ञानस्वभावे करुणा–प्रज्ञात्मके वज्र–वज्रघण्टे सव्य–सव्येतरकरयोर्मम वज्रसत्त्वः सप्रज्ञो दधातु हुँ हूँ फट् ।

स्वयं एवं वज्रघण्टा...... । शून्यता स्वभाव से रसना नाडी और अभिषेक द्रव्य वज्र हुँ एवं वज्र से उत्पन्न एकमुख नीलकाय कालचक्र । दोनों हाथों द्वारा वज्र एवं घण्टा धारण किए हुए, कर्तरी एवं कपाल धारण की हुई विश्वमाता द्वारा आलिङ्गित ।

स्वयं की ललना नाडी और घण्टा फ्रँ तथा कर्तरी से उत्पन्न पीत एकमुख विश्वमाता । दो हाथों के द्वारा कर्तरी एवं कपाल धारण की हुई कालचक्र द्वारा आलिङ्गित ।

उन दोनों के मस्तक पर 'ओं', कण्ठ में 'आः', हृदय में 'हुँ' तथा नाभि में 'होः' । हृदयस्थ 'हुँ' से रश्मियाँ प्रस्फुटित हुई । भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूँ वँ होः हिः ।

अपने अपने समयी से समरस हुए ।

ओं आ ई ॠ ऊ ॡ पञ्चधातुविशोधनि स्वाहा ।

इस तरह माताओं द्वारा अभिषेक द्रव्य देवों का अभिषेक किया गया । पिता को अक्षोभ्य तथा माता को वज्रसत्त्व द्वारा मुद्रित किया गया ।

गन्धं.......... ।

युगनद्ध के समाहित होने से महारागाग्नि के द्वारा गलन से उद्भूत अभिषेक द्रव्य वज्र और घण्टा में परिणत हुए ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हूँ'-रश्मि के द्वारा आकाशव्यापी जिन (बुद्ध), माता-पिता, पुत्र एवं भार्या सहित देव अभिषेकदेव आमन्त्रित हुए । वज्रभैरव .... ।

गन्धं.......... ।

इस प्रकार की अध्येषणा से आकाशस्थ जिन, माता-पिताओं द्वारा अभिषेक के लिए विचार किया गया । बोधिसत्त्वों द्वारा मङ्गलवाचन किया गया । रूपवज्री आदि के द्वारा पूजा करते हुए पुष्प आदि की वर्षा की गई । क्रोधी-क्रोधिनियों के द्वारा विघ्नों का अपसारण किया गया । साधित मण्डल के भीतर विराजमान युगनद्ध प्रधान के द्वारा वज्रघण्टा का ग्रहण कर अभिषेक किया गया ।

ओं हुँ होः सूर्यचन्द्रविशोधक स्वाहा ।

इस प्रकार अभिषेक करने से स्वकीय ललना और रसना दोनों नाडियाँ युगनद्ध प्रधान में परिणत हुईं । उनकी रश्मियों से मण्डलस्थ युगनद्ध प्रधान से एक दीप से दूसरे दीप के प्रज्वलन के समान आमन्त्रित युगनद्ध प्रधान स्वकीय ललना-रसना दो नाडी स्वरूप प्रकटित प्रधान युगनद्ध में विलीन हुए । समस्त अभिषेक देव भी आकर्षित होकर स्वकीय ललना-रसना दो नाडियों स्वरूप प्रकटित युगनद्ध प्रधान में विलीन हुए ।

गन्धं......... ।

यह तो बालक के हँसने और वार्तालाप करने के समान है । दोनों ललना एवं रसना नाडियों के मल विशोधित हुए । ललना और रसना दोनों के ही अवधूती में मिलन का सामर्थ्य प्राप्त हुआ । चित्त में अविचलित महासुख और वाक् में सर्वज्ञता के बीज स्थापित हुए । तथा युगनद्ध प्रधान की सिद्धि के साधन में अधिकार प्राप्त हुआ । सूर्य और चन्द्र एक में विशोधित हुए तथा चतुर्थ भूमि अर्चिष्मती प्राप्त करने में सामर्थ्य प्राप्त हुआ ।

इस प्रकार दक्षिणी द्वार के वाग्-भूमि पर दो अभिषेकों द्वारा गर्भ में-वायु एवं नाडी निष्पन्न होने के समान मूल वायु रूपी वाक् के मल का प्रक्षालन हुआ । वाग्-वज्री में अधिकार प्राप्त हुआ । वाग्-वज्री का बीज स्थापित होकर वाग्-वज्री की सिद्धि के साधन में अधिकार प्राप्त हुआ ।

पुनः दक्षिण की ओर से प्रदक्षिणा द्वारा पूर्वी द्वार पर ले जाकर चित्त की ओर अभिमुख होकर अभिषेक पीठ पर आरूढ़ हुआ । चित्तवज्र से अभिन्न गुरु एवं कालचक्र को इन्द्रिय एवं विषयों के मलशोधक व्रताभिषेक के लिए ...... मण्डल .... ।

ए ऐ अर् आर् ओ औ अल् आल् अं अः सर्वबोधिसत्त्वाः सभार्याः सर्वदा सर्वकामोपभोगं वज्रव्रतं मां ददन्तु स्वाहा ।

काय-वाक् वज्र के स्थान में 'हुँ' एवं वज्र से उत्पन्न कृष्ण चित्तवज्र, कृष्ण-रक्त-श्वेत त्रिमुख । छह हाथों के दाहिने तीन में खड्ग, कर्तरी एवं त्रिशूल तथा बाएँ तीन में कवच, कपाल एवं श्वेत खट्वाङ्ग धारण किये हुए लोचना द्वारा आलिङ्गित ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुँ'-रश्मि के द्वारा भावना-सृदश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूं वं होः हिः ।

समरस हुए ।

गुरु से अभिन्न प्रधान .... दशदिक् स्थित जिन (बुद्ध), माता-पिता, पुत्र एवं भार्या सहित सभी आमन्त्रित हुए ।

वज्रभैरव ...... ।

गन्धं......... ।

इस प्रकार की अध्येषणा से जिन (बुद्ध), माता-पिता आदि सभी समाहित हुए । महारागाग्नि से गलित हुए । गुरु से अभिन्न प्रधान के उष्णीष से प्रविष्ट हुए । वज्र मार्ग से निर्गत बोधिचित्त के द्वारा स्वयं चित्तवज्र में अभिषेक किया गया । माता के पद्म से निर्गत होकर अभिषेक-पीठ पर आरूढ़ हुआ ।

स्वयं अङ्गुष्ठवज्र .... । शून्यता स्वभाव से स्वकीय श्रोत्रेन्द्रिय एवं विषय धर्मधातु और अङ्गुष्ठ वज्र अ आ तथा वज्र से उत्पन्न वज्रपाणि और हरित धर्मधातुवज्री, हरित, रक्त और श्वेत त्रिमुख, छह हाथों में दाहिने ओर के तीन हाथों में वज्र, कर्तरी एवं परशु तथा बाएँ तीन हाथों में वज्रघण्टा, कपाल एवं ब्रह्मशीर्ष । क्रमशः शब्दवज्री एवं समन्तभद्र द्वारा आलिङ्गित ।

स्वयं की घ्राणेन्द्रिय एवं विषय स्प्रष्टव्य और अंगुष्ठवज्र ए ऐ तथा खड्ग से उत्पन्न आकाशगर्भ तथा स्प्रष्टव्य कृष्णवज्री, कृष्ण, रक्त एवं श्वेत त्रिमुख, छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में खड्ग, कर्तरी और त्रिशूल तथा बाएं तीन हाथों में कवच, कपाल और श्वेत खट्वाङ्ग धारण किए हुए । क्रमशः गन्धवज्री एवं सर्वनीवरणविष्कम्भिन् द्वारा आलिङ्गित ।

स्वयं के चक्षुरिन्द्रिय एवं विषय रस तथा अंगुष्ठ वज्र अर् आर् तथा रत्न से उत्पन्न क्षितिगर्भ एवं रक्त रसवज्री, रक्त-श्वेत-कृष्ण त्रिमुख । छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में अग्निवाण, वज्राङ्कुश एवं सशब्द डमरू तथा बाएं तीन हाथों में धनुष, वज्रपाश एवं नवाङ्ग रत्न धारण किए हुए क्रमशः रूपवज्री एवं लोकेश्वर द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय जिह्वेन्द्रिय एवं विषय रूप और अंगुष्ठवज्र ओ औ तथा पद्म से उत्पन्न लोकेश्वर तथा श्वेत रूपवज्री, श्वेत-कृष्ण-रक्त त्रिमुख । छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में मुद्गर, शूल एवं त्रिशूल तथा बाएं तीन हाथों में शतदल पद्म, आदर्श एवं माला धारण किए हुए क्रमशः रसवज्री एवं क्षितिगर्भ द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय कायेन्द्रिय, विषय गन्ध एवं अंगुष्ठ वज्र अल् आल् तथा चक्र से उत्पन्न सर्वनीवरणविष्कम्भिन् और पीत गन्धवज्री, पीत-श्वेत- कृष्ण त्रिमुख, छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में चक्र, दण्ड एवं भैरववज्र तथा बाएं तीन हाथों में शूल, वज्रांकुश एवं सशब्द घण्टा धारण किए हुए क्रमशः स्पर्शवज्री एवं आकाशगर्भ द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय मन–इन्द्रिय एवं विषय शब्द और अङ्गुष्ठ वज्र अँ अः तथा वज्र से उत्पन्न समन्तभद्र और नील शब्दवज्री, नील–रक्त–श्वेत त्रिमुख, छह हाथों में दाहिने ओर के तीन हाथों में वज्र, कर्तरी एवं परशु तथा बाईं ओर के तीन हाथों में क्रमशः वज्रघण्टा, कपाल एवं ब्रह्मशीर्ष धारण किये हुए धर्मधातुवज्री और वज्रपाणि से आलिङ्गित ।

उनके मस्तक पर 'ओं', कण्ठ में 'आः', हृदय में 'हुँ', नाभि में 'होः' । हृदयस्थ 'हुँ' से रश्मि प्रस्फुटित हुई । भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूं वं होः हिः ।

अपने–अपने समयी से समरस हुए ।

ओं आ ई ॠ ऊ लृ पञ्चधातुविशोधनि स्वाहा ।

इस प्रकार माताओं द्वारा अभिषेक द्रव्य देव अभिषिक्त हुए । कृष्णों का अमोघसिद्धि, रक्तों का रत्नसम्भव, श्वेतों का अमिताभ, पीतों का वैरोचन, हरितों का वज्रसत्त्व तथा नीलों का अक्षोभ्य द्वारा मुद्रण किया गया ।

गन्धं......... ।

माता–पिताओं के समाहित होने से महारागाग्नि के गलन से उद्भूत अभिषेक द्रव्य अङ्गुष्ठवज्र में परिणत हुए ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हूं' रश्मि के द्वारा आकाशव्यापी जिन, माता–पिता, पुत्र–भार्याओं सहित अभिषेक द्रव्य देव आमन्त्रित हुए ।

वज्रभैरव .... ।

गन्धं......... ।

इस प्रकार की अध्येषणा से आकाशस्थ जिन (बुद्ध) माता–पिताओं द्वारा अभिषेक पर विचार किया गया । बोधिसत्त्वों द्वारा मङ्गलवाचन किया गया । रूपवज्री आदि द्वारा पूजा करते हुए पुष्प आदि की वर्षा की गई । क्रोधी–क्रोधिनियों द्वारा विघ्नों का अपसारण किया गया । साधित मण्डल के भीतर विराजमान बोधिसत्त्व एवं बोधिसत्त्वाओं द्वारा अङ्गुष्ठवज्र का ग्रहण कर अभिषेक किया गया ।

ओं अ आ ए ऐ अर् आर् ओ औ अल् आल् अं अः विषयेन्द्रियविशोधनि स्वाहा ।

"ये सभी बुद्ध वज्रसत्त्व के पाणि में स्थित हैं । वज्रपाणि का व्रत स्थिर है । तुम भी इसे सदा धारण करो" ।

इस प्रकार के अभिषेक के द्वारा स्वसन्ततिस्थ इन्द्रिय एवं विषय बोधिसत्त्व एवं बोधिसत्त्वाओं में परिणत हुए । उनकी रश्मियों से मण्डलस्थ बोधिसत्त्व एवं बोधिसत्त्वाओं से एक दीप से दूसरे दीप के प्रज्वलन के समान आमन्त्रित बोधिसत्त्व एवं बोधिसत्त्वाएं स्वकायस्थ बोधिसत्त्व एवं बोधिसत्त्वाओं में विलीन हुए । समस्त अभिषेक देव भी आकर्षित होकर स्वसन्ततिस्थ इन्द्रिय एवं विषय रूपी प्रकटित बोधिसत्त्व एवं बोधिसत्त्वाओं में विलीन हुए ।

गन्ध.......... ।

यह तो बालक के पाँच कामगुणों के भोग करने के समान है । इन्द्रिय एवं विषयों के मल का शोधन हुआ । बोधिसत्त्व एवं बोधिसत्त्वाओं की सिद्धि के साधन में उनके स्वभाव को जानने से पाँच कामगुणों के भोग में अधिकार प्राप्त हुआ । वज्रायतन की सिद्धि एवं पाँचवी फल भूमि सुदुर्जया पर सामर्थ्य प्राप्त हुआ ।

क्रियासहित कर्माभिषेक शोधक नामाभिषेक की प्रार्थना के लिए ..... मण्डल .... ।

ओं ह हा य या र रा व वा ल ला सर्वक्रोधराजाः सभार्या मैत्री-करुणा-मुदितोपेक्षा-सर्वसमतास्वभावं वज्रपूर्वाङ्गं नाम मे ददन्तु ददन्तु हुं हूं फट् ।

स्वयं एवं वलय ...... शून्यता स्वभाव से स्वकीय मूत्रेन्द्रिय और क्रिया रससंक्रान्ति तथा अभिषेक द्रव्य वलय 'ह' 'हा' तथा वज्र से उत्पन्न शिखी और रौद्री दोनों हरित, हरित-रक्त-श्वेत त्रिमुख । छह हाथों में दाहिनी ओर के तीन हाथों में वज्र, कर्तरी एवं परशु तथा बाई ओर के तीन हाथों में वज्रघण्टा, कपाल एवं ब्रह्मशीर्ष धारण किए हुए क्रमशः अतिशय श्यामा एवं नील शुम्भ द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय मुखेन्द्रिय और क्रिया पुरीषविरेचन तथा अभिषेक द्रव्य वलय य या और खड्ग से उत्पन्न विघ्नान्तकृत् तथा अतिशय कृष्ण वीर्यिका, कृष्ण-रक्त-श्वेत त्रिमुख । छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में खड्ग, कर्तरी एवं त्रिशूल तथा बाएं तीन हाथों में कवच, कपाल एवं श्वेत खट्वाङ्ग धारण किये हुए स्तम्भिनी एवं पीत यमान्तकृत् द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय हस्तेन्द्रिय और क्रिया निगरण तथा अभिषेक द्रव्य वलय र रा और रत्न से उत्पन्न प्रज्ञान्तकृत् एवं जम्भली दोनों रक्त, रक्त-श्वेत-कृष्ण त्रिमुख । छह हाथों के दाहिने तीन हाथों में अग्निबाण, वज्रांङ्कुश एवं सशब्द डमरू तथा बाएँ तीन हाथों में धनुष्, वज्रपाश एवं नवाङ्ग रत्न धारण किए हुए स्तम्भिनी एवं श्वेत पद्मान्तकृत् द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय पादेन्द्रिय एवं क्रिया आदान तथा अभिषेक द्रव्य वलय व वा तथा पद्म से उत्पन्न पद्मान्तकृत् एवं श्वेत स्तम्भिनी, श्वेत-कृष्ण- रक्त त्रिमुख । छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में मुद्गर, शूल एवं त्रिशूल तथा बाएं तीन हाथों में शतदल पद्म, आदर्श एवं माला धारण किए हुए स्तम्भिनी एवं रक्त प्रज्ञान्तकृत् से आलिङ्गित ।

स्वकीय गुदेन्द्रिय एवं क्रिया वाचन तथा अभिषेक द्रव्य वलय ल ला तथा चक्र से उत्पन्न यमान्तकृत एवं पीत स्तम्भिनी । पीत-श्वेत- कृष्ण तीन मुख । छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में चक्र, दण्ड एवं भैरव वज्र तथा बाएं तीन हाथों में शंख, वज्राङ्कुश एवं सशब्द घण्टा धारण किए हुए अतिशय वीर्यिका एवं कृष्ण विघ्नान्तकृत् द्वारा आलिङ्गित ।

स्वकीय परमेन्द्रिय एवं कर्म मूत्रप्रस्राव तथा अभिषेक द्रव्य वलय हँ हः तथा वज्र से उत्पन्न सुम्भ एवं अतिशय श्याम श्यामा, नील-रक्त- श्वेत त्रिमुख । छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में वज्र, कर्तरी एवं परशु तथा बाएं तीन हाथों में वज्रघण्टा, कपाल एवं ब्रह्मशीर्ष धारण किए हुए उग्र लोचना एवं हरित शिखी द्वारा आलिङ्गित ।

उनके मस्तक पर 'ओं', कण्ठ में 'आः', हृदय में 'हुं', नाभि में 'होः' है । हृदयस्थ 'हुं' से रश्मि प्रस्फुटित हुई । भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित ।

जः हूँ वं होः हिः ।

अपने-अपने समयी से समरस हुए ।

ओं आ ई ॠ ऊ ॡ पञ्चधातुविशोधनि स्वाहा ।

इस प्रकार माताओं द्वारा अभिषेक द्रव्य देव अभिषिञ्चित हुए । क्रमशः वज्रसत्त्व, अमोघसिद्धि, रत्नसम्भव, अमिताभ, वैरोचन एवं अक्षोभ्य द्वारा मुद्रित हुए ।

गन्धं.......... ।

माता-पिता के समाहित होने से महारागाग्नि के द्वारा गलन से उत्पन्न अभिषेक द्रव्य वलय में परिणत हुए । गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हूँ'-रश्मि के द्वारा आकाशव्यापी जिन (बुद्ध), माता-पिता, पुत्र एवं भार्या सहित अभिषेकदेव आमन्त्रित हुए ।

वज्रभैरव .... ।

गन्ध.......... ।

इस प्रकार की अध्येषणा से आकाशस्थ जिन (बुद्ध) माता–पिताओं के द्वारा अभिषेक पर विचार किया गया । बोधिसत्त्वों द्वारा मङ्गलवाचन किया गया । रूपवज्री आदि के द्वारा पूजा करते हुए पुष्प आदि की वर्षा की गई । क्रोधी एवं क्रोधिनियों के द्वारा विघ्नों का अपसारण किया गया । साधित मण्डल के भीतर विराजमान क्रोधी एवं क्रोधिनियों के द्वारा वलय ग्रहण करके अभिषेक किया गया ।

ओं ह हा य या र रा व वा ल ला चतुर्ब्रह्मविहारविशुद्ध स्वाहा ।

गुरु तथागत के चर्यापथ के रूप में स्थित होकर–

"भवदुर्गति से निकाल कर, भव की अत्यन्त शान्ति के लिए वज्रसत्त्व तथागत, मैं तुम्हें व्याकृत करता हूँ" ।

हे अमुक, वज्रतथागतसिद्धिसमयस्त्वं भूर्भुवः स्वः ।

इस प्रकार अभिषेक करके व्याकरण की देशना से स्वकीय कर्मेन्द्रिय क्रिया सहित क्रोधी एवं क्रोधिनियों में परिणत हुए । उनकी रश्मियों के द्वारा मण्डलस्थ क्रोधी एवं क्रोधिनियों से एक दीप से दूसरे दीप के प्रज्वलन के समान आमन्त्रित क्रोधी एवं क्रोधिनियाँ स्वकीय क्रिया सहित कर्मेन्द्रियाँ प्रकटित क्रोधी एवं क्रोधिनियो में विलीन हुई ।

अभिषेक के समस्त देव भी आकृष्ट होकर स्वकीय क्रियासहित कर्मेन्द्रिय प्रकटित क्रोधी एवं क्रोधिनियों में विलीन हुए ।

गन्ध.......... ।

यह तो बालक के नामकरण के सदृश है । क्रिया सहित कर्मेन्द्रियों के मल का प्रक्षालन हुआ । क्रोधी एवं क्रोधिनियों की सिद्धि के साधन में अधिकार प्राप्त हुआ । चार अप्रमाण के द्वारा चार मारों का दमन हुआ एवं फलरूपी छठवीं अभिमुखी भूमि प्राप्त करने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ ।

इस प्रकार पूर्व दिशा की चित्तभूमि पर दो अभिषेकों द्वारा गर्भ में क्रिया सहित कर्मेन्द्रियों की निष्पत्ति के समान इन्द्रियों की विषयप्रवृत्ति एवं कर्मेन्द्रियों की क्रियाप्रवृत्ति के चित्तों के मलों का प्रक्षालन हुआ । चित्तवज्र की शक्ति की स्थापना में और चित्तवज्र की सिद्धि के साधन में अधिकार प्राप्त हुआ ।

पुनः पूर्व की ओर से प्रदक्षिणा द्वारा पश्चिमी द्वार पर ले जाकर ज्ञान की ओर अभिमुख होकर अभिषेक पीठ पर आरूढ़ हुआ । ज्ञान शोधक अनुज्ञा के लिए दक्षिणा के रूप में मण्डल .... ।

ओं एवं पद्मवज्रचिह्नौ प्रज्ञोपायौ मण्डलाधिपति-वज्रसुखज्ञानाङ्गं मम ददताम् हं हः हूं फट् ।

स्वयं .... ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुं'-रश्मि के द्वारा स्वयं आकर्षित होकर मुख में प्रविष्ट हुआ । कायसंस्थान के माध्यम से गुजरते हुए वज्रपथ से माता के पद्म में गलित विन्दु शून्यता में परिणत हुई । शून्यतास्वभाव से 'होः' एवं चक्र से उत्पन्न पीत ज्ञानवज्र, पीत-श्वेत-कृष्ण त्रिमुख । छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में चक्र, दण्ड एवं भैरववज्र तथा बाएं तीन हाथों में शंख, वज्रांकुश एवं सशब्द घण्टा धारण किए हुए तारा द्वारा आलिङ्गित ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुँ'-रश्मि से भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूं वं होः हिः ।

समरस हुए।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुं'-रश्मि के द्वारा दशों दिशाओं में स्थित माता-पिता, पुत्र, भार्या सहित सभी जिन (बुद्ध) आमन्त्रित हुए।

वज्रभैरव .... ।

गन्धं.......... ।

इस प्रकार की अध्येषणा के द्वारा माता-पिता सहित सभी जिन (बुद्ध) समाहित हुए। महारागाग्नि गलित हुई। गुरु से अभिन्न प्रधान के ऊष्णीष से प्रवेश हुआ। वज्रमार्ग से निर्गतबोधिचित्त ज्ञानवज्र के रूप में परिणत स्वयं अभिषिक्त हुआ।

स्वयं एवं आयुध .... ।

शून्यता स्वभाव से स्वकीय ज्ञानस्कन्ध, विज्ञानधातु एवं अभिषेक द्रव्य आयुध 'हँ' 'क्षः', वज्र से उत्पन्न वज्रसत्त्व एवं नील प्रज्ञापारमिता। नील-रक्त-श्वेत त्रिमुख। छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में वज्र, कर्तरी एवं परशु तथा बाएं तीन हाथों में वज्रघण्टा, कपाल एवं ब्रह्मशीर्ष धारण किए हुए वज्रधात्वीश्वरी एवं अक्षोभ्य द्वारा आलिङ्गित।

उनके मस्तक पर 'ओं', कण्ठ में 'आः', हृदय में 'हुँ', नाभि में 'होः' है। हृदयस्थ 'हुँ'- से रश्मि प्रस्फुटित हुई। भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए।

जः हूँ वं होः हिः ।

अपने-अपने समयी से समरस हुए।

ओं आ ई ॠ ऊ ॡ पञ्चधातुविशोधनि स्वाहा ।

इस प्रकार माताओं के द्वारा अभिषेक द्रव्य देव अभिषिक्त हुए । अक्षोभ्य द्वारा मुद्रण हुआ ।

गन्ध.......... ।

माता-पिता समाहित होने से महारागाग्नि द्वारा गलन से उद्भूत अभिषेक द्रव्य आयुध में परिणत हुए ।

गुरु से अभिन्न प्रधान की हृदयस्थ 'हुँ'-रश्मि द्वारा आकाशव्यापी जिन (बुद्ध), माता-पिता, पुत्र, भार्या सहित अभिषेक देव आमन्त्रित हुए ।

वज्रभैरव .... ।

गन्ध.......... ।

इस प्रकार की अध्येषणा से आकाशस्थ जिन (बुद्ध), माता-पिताओं द्वारा अभिषेक पर विचार किया गया । बोधिसत्त्वों द्वारा मङ्गलवाचन किया गया । रूपवज्री आदि द्वारा पूजा करते हुए पुष्प आदि की वृष्टि की गई । क्रोधी-क्रोधिनियों द्वारा विघ्न का अपसारण किया गया । साधित मण्डल के भीतर विराजमान वज्रसत्त्व और प्रज्ञापारमिता द्वारा आयुध को ग्रहण करते हुए अभिषेक किया गया । सभी लोकों के सभी सत्त्वों के हित के लिए नाना प्रकार के दम्य जनों के अनुरूप धर्मचक्र का प्रवर्तन करें ।

ओं हँ क्षः धर्मचक्रप्रवर्तक स्वाहा ।

उपर्युक्त 'धर्म' शब्द के स्थान पर क्रमशः वज्र, खड्ग, रत्न, पद्म, चक्र का योग करें । इसी तरह मन्त्रस्थ 'धर्म' शब्द के स्थान पर भी क्रमशः वज्र, खड्ग, रत्न, पद्म एवं चक्र का योग करें ।

इस प्रकार अभिषेक के द्वारा स्वकीय ज्ञानस्कन्ध और विज्ञानधातु माता-पिता वज्रसत्त्व में परिणत हुए ।

गन्धं......... ।

'भ्रूँ' से उत्पन्न चक्र, ओं वज्रहेतु 'मं', अन्तिम स्वर 'अः' से उद्भूत शंख, ओं वज्रभाष 'रं', प्रथम स्वर 'अ' से उद्भूत पोथी 'अ', अन्तिग स्वर 'अः' से उद्भूत घण्टा 'अः' सभी आकाशलक्षण हैं । आकाश भी अलक्षण है । आकाश के समता-योग से सर्वश्रेष्ठ समता प्रकटित हुई । आज से लेकर चित्तोत्पाद मात्र से अनुत्तर धर्म-शंख को सर्वतः परिपूर्ण करके धर्मचक्र का प्रवर्तन करें । सभी लोक में सर्वतः सभी सत्त्वों के हित के लिए नाना दम्य जनों के लिए यथायोग्य धर्मचक्र प्रवर्तन करें । प्रज्ञोपाय-स्वभाव में चिन्तामणि के समान विशिष्ट, खेद रहित और शंकारहित होकर सत्त्वों के हित का सम्पादन करें ।

प्रभु के वचनानुसार करूँगा ।

भगवन् मैंने इसे दिया है । आप इसे उपकृत करें ।

भगवान् मैंने ग्रहण किया है, मुझे उपकृत करें ।

गुरु से अभिन्न प्रधान के हृदय से मन्त्रावलि उत्पन्न हुई और मुख से बाहर निकली । स्वयं के मुख में प्रविष्ट होकर हृदयस्थ 'हुँ'-कार के चारों ओर स्थित हुई ।

ओं आः हुँ हो हँ क्ष म ल व र य हुं फट् ।

ओं हां ह्रीं हृं हूं ह्लृं हः स्वाहा ।

ओं श्रीकालचक्र हुं हूं फट् ।

यह तो विघ्नों के न होने, शान्त आदि सिद्धियों के साधन परमार्थ मन्त्र द्वारा सिद्धि क्षेत्र के परिशोधन के लिए मन्त्रानुज्ञा है । स्वकीय प्रत्येक आँखों (दोनों) में कृष्ण प्रँ, ओं वज्रनेत्र अपहर पटलं ह्रीः ।

जैसे अक्षिराज के द्वारा लोक के अक्षिपटल का अपसारण किया जाता है, वैसे ही पुत्र, तुम्हारे अज्ञानरूपी तिमिर जिन (बुद्धों) द्वारा अपसारण किया गया ।

ओं दिव्यनयनमुद्घाटय मम स्वाहा ।

अज्ञानरूपी तिमिर से विमुक्त होकर ज्ञानचक्षु का उद्घाटन किया गया । 'आः' से उद्भूत आदर्श में वह परिणत हुआ । सभी धर्म प्रतिबिम्ब के समान हैं, स्पष्ट, शुद्ध एव निर्मल है, ग्राह्यत्वरहित एवं अनिर्वचनीय हैं, हेतु एवं कर्म से भलीभाँति उत्पन्न हैं, प्रकटित कालचक्र शुद्ध, अकलुषित एवं आदर्श के समान है, समस्त बुद्धस्वभाव वे स्वयं हे पुत्र, तुम्हारे हृदय में स्थित हैं ।

सभी धर्मों को इसी तरह निःस्वभाव एवं अस्थिर जानकर तुम सत्त्वों का अतुलनीय हित करो । तुम त्राताओं (बुद्धों) के पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए । सामान्यतया सभी धर्म आदर्श में प्रतिबिम्ब की तरह जानना चाहिए । विशेषतः अपने हृदयस्थ कालचक्र रूपी आदर्श में प्रतिबिम्ब के समान जानना चाहिए ।

'होः' से उत्पन्न धनुष् एवं बाण । हो ....।

ओं सर्वतथागत अनुरागयस्व ।

ओं सर्वतथागत अनुरागयामि ।

स्वयं एवं वज्रघण्टा .... । शून्यतास्वभाव से स्वयं, वज्र हूँ और वज्र से उत्पन्न वज्रसत्त्व तथा घण्टा 'आः' एवं कर्तरी से उत्पन्न प्रज्ञापारमिता–तीनों नीलवर्ण काय । नील–रक्त–श्वेत त्रिमुख । छह हाथों में दाहिने तीन हाथों में वज्र, कर्तरी एवं परशु तथा बाएं तीन हाथों में वज्रघण्टा, कपाल एवं ब्रह्मशीर्ष धारण किए हुए ।

उनके मस्तक पर 'ओं', कण्ठ में 'आः', हृदय में 'हुँ' तथा नाभि में 'हो' स्थित है । हृदयस्थ 'हुँ' से रश्मि प्रस्फुटित हुई । भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूँ वँ होः हिः ।

अपने-अपने समयी से समरस हुए । माताओं के द्वारा :-

ओं आ ई ॠ ऊ ॡ पञ्चधातुविशोधनि स्वाहा ।

इस तरह अमृत जल से अभिषेक द्रव्य देव अभिषिक्त हुए । अक्षोभ्य के द्वारा मुद्रित हुए तथा गलन से उद्भूत वज्र और घण्टा में परिणत हुए ।

आदि-अन्त रहित बोधिसत्त्व, वज्रसत्त्व महानन्द, समन्तभद्र सर्वात्मक मैं वज्रगर्वी के अधिपति भगवान् श्री परमाद्य का पुरुष हूँ ।'

ओं महावज्र हूँ ।

शून्यता से अभिन्न जिन (बुद्धों) का अद्वय ज्ञान चित्त तो गुह्यवज्र है । उसके स्मरण के लिए वज्रधर वज्रतथता के माध्यम से ग्रहण करें ।

यह समस्त बुद्धों के प्रज्ञाघोष का अनुगमन करने वाला कहा गया है । तुम भी इसे हमेशा धारण करो । बुद्ध इसे परम बोधि मानते हैं । समस्त धर्मो की निःस्वभावता के घोष को घण्टा द्वारा ध्वनित कर चित्त द्वारा घण्टा बजाकर घण्टा तथता के द्वारा ग्रहण करें । भव (संसार) स्वभाव से शुद्ध है । स्वभाव से भव रहित है । स्वभावशुद्ध से युक्त होने पर भव परम (श्रेष्ठ) हो जाएगा ।

स्वयं सुख एवं शून्य से अभिन्न ज्ञान के ग्राह्याकार वज्रसत्त्व काय में उदित देवकाय महामुद्रा में प्रकटित हुए । अक्षोभ्य द्वारा मुद्रित हुए ।

गन्ध.......... ।

निश्चित रूप से वज्रगोत्रीय को प्राणिहत्या करनी चाहिए, खड्गीय (खड्गगोत्रीय) को भी असत्य भाषण (मिथ्यावचन) का प्रयोग करना चाहिए । रत्नगोत्रीय को परद्रव्य का हरण (अदत्तादान) करना चाहिए । परम पद्मगोत्रीय को भी परस्त्री का हरण (काम-मिथ्याचार) करना चाहिए । सुरा, दीप--बुद्ध एवं समस्त भद्र विषयों को चक्र पर आश्रित करना चाहिए अर्थात् सेवन करना चाहिए । डोम्बी आदि सभी भद्र स्त्रियों की कर्तिका में आकाशपद्म में निन्दा नहीं करनी चाहिए । सत्त्वों के हित के लिए धनसहित शरीर का भी दान करना चाहिए और आप इनकी रक्षा न करें । हे कुलपुत्र, बुद्ध हो जाओगे, अन्यथा अनन्त कल्पों में भी बुद्ध न हो सकोगे-ऐसा जिनों (बुद्धों) ने कहा है ।

इस प्रकार पश्चिमी दिशा के ज्ञानाभिमुखी भूमि पर अनुज्ञा अभिषेक तो पिता द्वारा बालक को पाठ पढ़ाने (ज्ञानदान) करने जैसा है । अभी-अभी उत्पन्न बालक में जैसे ज्ञानवायु गमन करती है, वैसे ही प्रज्ञपित अनुज्ञा अभिषेक के द्वारा ज्ञान के मल का शोधन होता है । वज्रसत्त्व के बीज की स्थापना के लिए ज्ञानधातु को शोधित किया गया तथा फल सप्तमी (दूरङ्गमा) भूमि की प्राप्ति का सामर्थ्य प्राप्त हुआ ।

इस प्रकार चार मण्डलों में से रजोवर्णमण्डल में सभी सात अभिषेकों में जल-कर्म का अनुसरण करने से इन्हें जलाभिषेक की आख्या प्राप्त होती है । पाप-मलों का प्रक्षालन होता है, उत्पन्नक्रम मार्ग की भावना एवं अकनिष्ठपर्यन्त लौकिक सिद्धियों की साधना में अधिकार प्राप्त हुआ । पुण्यसम्भार की शक्ति स्थापित हुई । उत्पन्न क्रम से सम्बद्ध चर्या और मुक्तिदायक गुह्यतन्त्र के उपासक होकर दृष्टधर्म में यदि मण्डलचक्र का साक्षात्कार करें तो इसी जन्म में सात भूमियों के अधिपति होंगे । दृष्टधर्म में वैसा न कर यदि दश अकुशलों से विरत होकर स्थित रहें तो सात जन्मों में सात भूमियों के अधिपतित्व को प्राप्त होंगे ।

ओं सर्वतथागत सप्ताभिषेकसप्तभूमिप्रप्तोऽहम् ।

शाठ्यवश मूलापत्ति होने पर नरक में पतन होता है । ये सब दुःख हैं । मूलापत्ति को विशुद्ध करके गुणवान् साधक सात अभिषेकों में स्थित होता है । कलश एवं गुह्य अभिषेकों में तो व्रत नियत होने से उत्तर (अभिषेकों) में शुद्धि नहीं होती । जो मूलापत्ति होती है, उसे शुद्ध करने के लिए पुनः इस मण्डल में प्रवेश करना होता है । अनुज्ञा प्राप्त होने पर सभा में ज्येष्ठ का नाम पुनः लघु हो जाता है । पुत्रों के द्वारा श्रीसम्पन्न गुरु के चित्त को आकुलित करने से मूलापत्ति शशधर (एक=प्रथम) होती है । उनके वचन के उल्लंघन से दूसरी तथा बन्धुओं पर क्रोध करने से तीसरी मूलापत्ति होती है । मैत्री के त्याग से चौथी तथा बोधिचित्त के पतन से शर (पाँचवीं) होती है । सिद्धान्त की निन्दा करने से छठवीं तथा अपरिपक्व जन को गुह्य (तन्त्र) की देशना करने से पर्वत (सातवीं) होती है । स्कन्ध को क्लेश देने से नाग (आठवीं) तथा शुद्ध धर्म में अश्रद्धा करने से नवम होती है । कपट-मैत्री आदि से दिक् (दसवीं) तथा नाम आदि से रहितता में सुख विकल्प से रुद्र (ग्यारहवीं) होती है । शुद्ध सत्त्वों में दोषारोपण से सूर्य (बारहवीं) तथा प्राप्त समय को त्यागने से अन्य (तेरहवीं) होती है । स्त्री मात्र की निन्दा करने से मनु (चौदहवीं) मूलापत्ति होती है । ये सभी वज्रयान में अवस्थित लोगों के लिए हैं ।

जैसे प्रभु ने दी, उन सभी का मैं पालन करूँगा । आज मेरा जन्म सफल है, मेरा जीवित होना भी फलयुक्त है । मैं आज बुद्धगोत्र में उत्पन्न हो गया और आज मैं बुद्धपुत्र हूँ ।

मण्डल ...... ।

ओं आः हुँ हो हं क्षः ।

ओं शून्यता .... कामि अं हूँ स्वाहा ।

ओं पुष्प .... शब्द आः हूँ स्वाहा ।

ओं रूप .... स्पर्श आः हूं स्वाहा ।

ओं आः हूं हो । त्रिधात्वीश्वर .... ।

लघु एवं दीर्घ निंकाय से उत्पन्न मनोज्ञ बारह देवियाँ आकाशव्यापी गण का निर्माण करके मण्डल देव समूह की पूजा कर रही हैं ।

ओं गन्धं.......... ।

कामं अर्चनं कुरु कुरु स्वाहा ।

रत्न, पुष्प, सुवस्त्र, अर्घ्य, धूपरूपी मेघसमुद्र, दीप, घण्टानाद, वितान, पताका, नटी और वाद्यशब्द आदि प्रमोद के उत्पाद के लिए मैं भगवान् को अर्पित करता हूँ ।

ओं श्री..... पुष्पं ...... शब्दं प्रतीच्छ नमः

इस क्षेत्र में पाँच कामगुणों के द्वारा..... अर्पण करता है ।

ओं श्री ..... रूपं .... स्पर्श प्रतीच्छ नमः । ओं श्री कालचक्र सपरिवार नमः । सिद्धिदानवज्र .... त्वां प्रणमामि । शून्याय करुणा .... नमः । शून्यता-करुणास्वभावात्मक ..... । ओं श्रीकालचक्र सपरिवार ..... ।

ओं आः हुँ हो त्रिधात्वीश्वर तु....... । ओं श्रीकालचक्र सपरिवार ...... । चवर्ग लघु-दीर्घ से उत्पन्न .... ।

गुरु एवं मण्डल के समस्त देव हम पर ध्यान दें । जो भी अज्ञानमति मेरे द्वारा थोड़ा भी दुष्कृत हो गया हो, शरीरधारी होने के कारण वे सभी (दुष्कृत) नाथ के द्वारा क्षमा किये जाएँ । अलाभी, अपरिज्ञानी एवं सर्वथा असमर्थ होने के कारण

जो भी अयुक्त कार्य हुए हैं, उन सभी को प्रभु द्वारा क्षमा करना युक्तिसंगत है ।

ओं । आपके द्वारा समस्त सत्त्वों का हित होता है । अनुरूप सिद्धि प्रदान करें । बुद्धक्षेत्र में जाकर भी पुनः यहाँ पधारने की कृपा करें ।

ओं आः हुँ हो हं क्ष वज्र मु ।

लोकातीत समस्त देव मेरे हृदय में पधारें । 'क्षः' इन्द्र आदि लौकिक देव अपने-अपने स्थान में चले जाएँ ।

अकारो मुखं .... । नमः कालचक्राय ।

ओं आः हुँ हो हँ क्षः ।

शून्यता .... । शून्यतास्वभाव 'वँ' से पद्म की नाभि में चन्द्र, सूर्य, राहु, कालाग्नि के आसन पर 'हुँ' एवं वज्र से उत्पन्न नीलवर्ण श्रीकालचक्र, एकमुख, दोनों हाथों द्वारा वज्र एवं घण्टा धारण किए हुए विश्वमाता द्वारा आलिङ्गित प्रत्यालीढ मुद्रा में विराजमान हुए । पूर्व और दक्षिण दल के ऊपर 'ह्य' 'ह्या' और ध्वज से उत्पन्न कर्कोटक एवं कृष्ण पद्म, दक्षिण और पश्चिम दल के ऊपर 'हर' 'हर' एवं मङ्गल से उत्पन्न वासुकि तथा रक्त शंखपाल, उत्तर और उत्तरपूर्व दल के ऊपर 'ह्व' ह्वा' एवं पद्म से उत्पन्न कुलिक एवं श्वेत अनन्त । पश्चिम और पश्चिमोत्तर दल पर 'ह्ल' 'ह्ला' एवं वज्र से उत्पन्न तक्षक एवं पीत महापद्म । 'हूँ' 'क्षुं' एवं कलश से उत्पन्न हरित जिन (बुद्ध) और नीलविजय सभी सर्पफण शीर्ष वाले, एकमुख, चार हाथों में दाहिने ओर के दो हाथों में कलश एवं वज्र तथा बाईं ओर के दो हाथों में पद्म और रतन धारण किए हुए, वज्र-आसन पर आरूढ़ के मस्तक पर 'ओं', कण्ठ पर 'आः', हृदय में 'हुँ' नाभि में 'होः' स्थित हैं । हृदय से 'हुँ'-रश्मि प्रस्फुटित हुई । भावनासदृश ज्ञानसत्त्व आमन्त्रित हुए ।

जः हूँ वँ होः हिः ।

अपने-अपने समयी समरस हुए । आमन्त्रित माताओं के द्वारा-

ओं आ ई ॠ ऊ ॡ पञ्चधातुविशोधनि स्वाहा ।

इस प्रकार वाग्-अमृत के द्वारा अभिषेक किया गया । प्रधान को अक्षोभ्य द्वारा, विश्वमाता को वज्रसत्त्व द्वारा, पूर्व एवं पूर्व-दक्षिण में स्थितों को अमोघसिद्धि द्वारा, दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम मे स्थितों को रत्नसम्भव द्वारा, उत्तर एवं उत्तर-पूर्व में स्थितों को अमिताभ द्वारा, पश्चिम एवं पश्चिमोत्तर मे स्थितों को वैरोचन द्वारा, जिनों (बुद्धों) को अक्षोभ्य द्वारा तथा विजयी को वज्रसत्त्व द्वारा मुद्रित किया गया ।

गन्धं.......... ।

ओं आः हुँ होः श्री कालचक्राय जयविजयाय, पद्मकर्कोटक-वासुकि-शंखपाल-कुलिक-अनन्त-तक्षक-महापद्म-सपरिवारेभ्यः इदं बलिं गन्धं पुष्पं धूपं अक्षतं ददामहे, ते चागत्य सपरिवारा शीघ्रमिदं बलिं गृह्णन्तु खादन्तु पिबन्तु जः हूँ वँ होः सर्वसत्त्वानां शान्तिं पुष्टिं रक्षावरणगुप्तिं कुर्वन्तु हुँ हूँ फट् वज्रधर आज्ञापयति स्वाहा ।

सपरिवार जय, विजय, पद्मकर्कोटक, वासुकि, शंखपाल, कुलिक, अनन्त, तक्षक, महापद्म इन सबके लिए इस बलि को और गन्ध, पुष्प, धूप, दीप एवं अक्षत को हम अर्पित करते हैं, सपरिवार वे आकर शीघ्र इस बलि को ग्रहण करें, खाएं, पीएं । **'जः हूँ वँ होः'** पूर्ण तृप्त हों । सभी सत्त्व शान्ति, पुष्टि, रक्षावरण-गुप्ति करें **'हुँ हूँ, फट्** वज्रधर ऐसी आज्ञा देते हैं **'स्वाहा'** ।

'क्षः' नाग लोग रजोवर्ण को बड़े आदर के साथ ग्रहण कर समुद्र में चले गए ।

ओं वज्रकील उत्कीलय सर्वविघ्नं वज्रं धारय आज्ञापय हूँ हूँ हूँ हूँ फट् होः ।

ओं रु रु स्फुर ज्वल तिष्ठ सिद्धिलोचनि सर्वार्थसाधनि स्वाहा

क्षः ।

भवतु सर्वमङ्गलम्